Shodh, Samiksha aur Mulyankan (International Research Journal)—ISSN-0974-2832,Vol. II, Issue-Issue-14 (March, 2010)

नरेन्द्र कोहली की कहानियों में चित्रित नारी समस्या

*डॉ. आल्लाबक्श एच. जमादार

भारतीय समाज में नारी का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। सृष्टि के संचालन के लिए प्रकृति ने नारी और पुरूष की उत्पत्ति की। प्राकृतिक शरीर रचना की दृष्टि से दोनों ही अपने-अपने में अपूर्ण है। दोनों एक दूसरे पर अवलम्बित हैं। समाज को किसमान रखने के लिए नारी और पुरूष से अधिक नारी का भाग होता है। नारी पुरूष के जीवन में माँ, बहन, पत्नी, कन्या के रूप में परिपूर्ण बनाती है। फिर भी यह सत्य है कि, पुरूष ने नारी के उदर से जन्म लेकर भी उसके प्रति निष्ठा निभायी। उसने नारी को जीवन के हर क्षेत्र में बाधक बताया सदियों से पुरूष उसका छल करता आया है। अगर गहराई से सोचा जाए तो नारी ही परिवार की नीव है - "कन्या की सुंदरता, वधु की सरलता और माता की पवित्रता से ही नारी की इकाई परिपूर्ण होती है।"[१] परिवार, समाज तथा राष्ट्र के निर्माण में नारी की महत्त्वपूर्ण भुमिका रही है। इसलिए यह कहा गया है कि, "जहाँ भी प्रेम है, वहाँ भी करूणा है, जहाँ दया है वहाँ स्त्री मौजूद है।"[२] नारी में स्नेह, सहनशीलता, समर्पण की भावना आदि गुण होने के बावजूद भी पुरूष प्रधान संस्कृति ने उसे ठिक से समझने की कोशिश नही की तथा उसके स्वातंत्र्य को स्वीकारने का प्रयास भी नही किया। नारी ने हमेशा होनेवाले अत्याचार पर परदा डालने की कोशिश की उसका विरोध उन्होंने कभी नही किया। वह हमेशा स्वयं को परंपरा तथा नैतिकता की डोर में बंधी रही। मध्ययुगीन काल में नारी की स्थिति और भी शोषनीय बन गई। उस समय समाज में ऐसी "गुलाम स्त्रियों को रखना प्रतिष्ठा का लक्षण माना जाता था, प्रत्येक अमीरों के पास अनेक गुलाम स्त्रियां रहती थी।"[३] आधुनिक काल में अंग्रेजो की नीतियों तथा शिक्षा प्रणाली से नारी के स्थिति में सुधार आया। सदियों से शोषित नारी की मुक्ति होने की आशा पल्लवित हो गई, लेकिन पुरूषों ने नारी शिक्षा को महत्व नही दिया। फिर भी अपनी शैक्षिक उन्नति के कारण आज नारी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि सभी क्षेत्रों में सफलता पुर्वक काम कर रही है। जिस राष्ट्र में शिक्षित स्त्रियों की संख्या अधिक होती है उस राष्ट्र को सुसंस्कृत माना जाता है। नारी शिक्षा के संबंध में स्वामी विवेकानंद ने ठीक ही कहा है कि, "बिना शिक्षा के स्त्रियों का उत्थान और राष्ट्र की उन्नति असंभव है। शिक्षा बालिकाओं का धर्मपरायण, नीतिपरायण उत्तम गृहिणी एवं आदर्श माता बनाती है।"[४]

नौकरी करनेवाली अविवाहित नारी का जीवन तो बडा कष्टदाई हो गया है। उसमें से "यदि वह छोटे पद पर काम कर रही है, तो उसे ऐसे उलझन में डाला जा सकता है कि आदेश का पालन नहीं करने पर उसे नौकरी से हाथ धोना पड सकता है।"[५] इतना ही नही घर और नोकरी दोनों जगहों के उत्तरदायित्वों को निभाते रहने से उसके उत्तदायित्वों में संघर्ष की स्थिती पैदा हो रही है। फिर भी वह अपनी शिक्षा के बलबूते पर संघर्षो से जूझती हुई अपना रास्ता निश्चित करती जा रही है।

आज के नये युग ने मनुष्य के सामने जितने आर्थिक और राजनीतिक एवं सामाजिक उलझन भरे प्रश्न रहे है, उनमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न रहा है कि आज के इस युग में स्त्री का समाज में कौन सा स्थान रहेगा? वर्तमान युग में नारी आर्थिक दृष्टि से अपने पैरो पर खडा रहना पसंत करती है। आज तक पुरूष नारी पर अत्याचार करता आया है। क्योंकि नारी उन पर अवलंबित थी। लेकीन आज नारी पुरूष से आर्थिक स्वावलम्बन की मांग करती है। "भारतीय समाज में शताब्दियों से उपेक्षित नारी पुरूष के अत्याचारों से पीडित रही है। उसके स्वतंत्र अस्तित्व की किसी को कल्पना तक नही। निर्जिव पदार्थो के समाज उसका क्रय विक्रय होता रहा। वह असमर्थ है, इसलिए अत्याचार सहती रही। समाज में उसका स्थान "भोग्यमात्र" रहा है। धीरे - धीरे परिस्थिति अनुकूल पाकर नारी ने अपनी अलग पहचान बनाती गयी। आज समाज तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है।"[६] इन बदलते समाज में नारी का स्थान महत्वपूर्ण है। पुरातन काल से नारी समस्या का प्रमुख कारण प्राय: आर्थिक पराधिनता था। वर्तमान काल में नारी शिक्षा का प्रचार होने के कारण आज नारी भी पुरूष के कन्धे से कन्धा लगाकर नौकरी करती है। उसकी आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आ रहा है। फिर भी पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था के कारण नारी समस्या जटिल बनती गयी। आधुनिक युवा के लेखकों ने आज की नारी की सामाजिक स्थिती और मानसिकता को बडी गहराई से चित्रित किया है। नरेन्द्र कोहली ने अपनी कहानियों में पढी - लिखी अविभाजित वर्ग की, मध्यमवर्ग की नारियों की समस्याओं पर अपनी लेखनी चलायी है। आज चाहे पढी - लिखी कामकाजी महीला हो या घर की चार दिवारी में रहनेवाली नारी हो सभी वर्ग की नारियों को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पडता है।

नरेन्द्र कोहली का व्यक्तित्व - कृतित्व : नरेन्द्र कोहली आज के युग के जाने - माने कथाकार, नाटककार, निबन्धकार, व्यंगकार और साहित्य के गंभीर अध्येता है। नरेन्द्र कोहली ने एक मनुष्य के रूप में अपनी पारिवारिक स्थितियों से अपने शैशवकाल में प्रभाव ग्रहण किया है। लेखक की माँ, उसके पिता, भाई-बहन, दादा-परदादा आदि सम्बन्धियों के माध्यम से वह अपनी सामाजिक वातावरण को आत्मगत करते हुए सामाजिक वातावरण में अपने आप को

*रीडर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग, भाई किशनराव देशमुख महाविद्यालय, चाकूर, लातूर

अनुकूल बनाने की कोशिष करते है। नरेन्द्र कोहली का जन्म ६ जनवरी १९४० इ. मं. स्यालकोट में प्रातः साढे नौ बजे हुआ था। जिस घर में उनका जन्म हुआ वह उनके दादा का घर था। दादा पंजाब के वन - विभाग में हेडक्लर्क थे और उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी थी। उनकी माता का नाम विद्यावंती था। वह निरक्षर थी। वह स्यालकोट के पास के ही एक गाँव 'कौलोकी' के कुषक परिवार की कन्या थी। 'कौलोकी' में न स्कुल था, न डाकघर, न ही कुछ और कारण वह सर्वथा निरक्षर थी और हैं। उनकी शिक्षा का आरंभ छह वर्ष की आयु में देवसमाज हाईस्कुल, लाहौर में हुआ। ९ अक्तुबर १९६५ ई. को मधुरिमा जी से उनका विवाह हुआ। विवाहोपरांत आरंभिक झगडे और मतभेद होते रहे, पर उन्होंने कभी कोई गंभीर मोड नहीं लिया। १९६६ में उनको पहली बच्ची हुई और चार महिनो के पश्चात उसका देहांत हो गया। दिसंबर १९६७ ई. में जुडवा संतानों कार्तिकेय और सुरभि का जन्म हुआ। "सुरभि केवल २४ दिनों की आयु लेकर आयी। कार्तिकेय अब अर्थशास्त्र में एम. ए. कर "दिल्ली विश्वविद्यालय" के एक कॉलेज में लेक्चरर है। १९७५ ई. में अगस्त्य का जन्म हुआ। वह बारहवीं कथा में पढ रहा है।"[७]

उनका चरित्र एक खुली हुई किताब है। बहुत देर तक गम्भीर बैठे रहना उनके लिए दुष्कर है। बाते करने में वो बहुत स्पष्टवादी है। स्पष्टवादिता के कारण शत्रु - मित्रों की संख्या बढा दी है। वह जिद्दी और क्रोधी भी कम नहीं है। जीवन से लेकर साहित्यिक क्षेत्र तक उनका यह रूप देखने को मिलेगा। उनका प्रकृतिप्रेम बहुत ही गहरा एवं अनुपम है। उनके साहित्य पर उनकी छाया स्पष्ट रूप से अच्छादित अनाचारों के खिलाफ लडना, अधिकारो के लिए सदैव झगडना, गलत कार्य न करना, गलत आरोपों को न सहना उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है। रोजी-रोटी या पैसे के कारण उन्होंने कभी भी अपने स्वाभिमान को नत नहीं होने दिया। कोहली जी में जिन्दा-दिली कूट-कूट कर भरी हुई हैं। जीवन और जगत के प्रति उनकी गहरी आस्था है। प्रबल इच्छा-शक्ति, लगनशीलता के कारण कठिन से कठिन एवं संघर्षमय परिस्थिति में भी वे उससे मुँह मोडनेवाले नहीं है। महेश दर्पण ने कहा है - "नरेन्द्र कोहली, यानी धनी श्वेत श्याम दाढी... चश्मे के भीतर से बाहर का सबकुछ समेट लेने को आतुर आंखे... और मित्रों में बेहद व्यावहारिक और प्रैक्टिकल व्यक्ति के रूप में चर्चित... यानी घर के भीतर तो एक जिम्मेदार पिता और पति हैं ही, बाहर भी एक बेहतर इंसान और जिम्मेदार, सामाजिक के रूप में जाना जाता है यह व्यक्ति... जो सच पूछे तो नीचे से ऊपर तक साहित्यिक हैं।"[८]

नरेन्द्र कोहली की कहानियों में चित्रित नाही समस्या :-

नारी समस्या :- नरेन्द्र कोहली ने अपनी कहानियों में पढी-लिखी अविभाजित वर्ग की, मध्यवर्ग की नारियों की समस्याओं पर अपनी लेखनी चलाई है। आज चाहे पढी-लिखी, कामकाजी महिला हो या घर की चार दिवारी में रहनेवाली नारी हो सभी वर्ग की नारियों को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पडता है।

दो-ढाई और आठ :- नरेन्द्रजी ने यह बताया है कि नारी कितनी भी पढी - लिखी क्यों न हो, वह कभी स्वतंत्र नहीं हो सकती। वह अपनी अच्छा के अनुसार पैसे खर्च नहीं कर सकतीं। कहानी की नायिका कांति पढी-लिखी युवती हैं। वह शहर के किसी हिस्से में नौकरी करती है। वह पैसे कमाती है, लेकिन अपने लिए एक भी पैसा खर्च नहीं कर सकतीं। वह दूसरों के लिए ही पैसा खर्च करती है फिर भी घरवाले पैसों का हिसाब पुछते है। उस पर मिथ्या-भाषण का आरोप लगाते हैं। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने नारी की दुर्बलता पर प्रकाश डाला हैं।

मेरा अपना संसार :- कहानी की नायिका अपने माँ के साथ अपने सहेली के घर दिल्ली जा रही हैं। इतने बडे शहर में सरला के सिवा और कोई भी उसके पहचान का नहीं था। सरला का भाई उसे लेने के लिए स्टेशन आनेवाला था पर उसे भी वह नहीं जानती थीं। एक अज्ञात-सा भय उसके मन पर छा गया। एक प्रकार की आशंका उसके मन में छा जाती हैं - "यदि सरला का भाई स्टेशन पर न आया तो? मैं भी तो उसे नहीं पहचानती। कभी देखा नहीं तो पहचानू कैसे? ऐसी स्थिति में क्या होगा? इतने बडे शहर में मैं कहाँ जाऊँगी। मैं तो यहाँ किसी को जानती भी नही..."[९] इस तरह के सवाल उसके मन में उठते हैं। लेखक ने इस कहानी के माध्यम से बताया है कि आज भी समाज में नारी की दुर्बलता दिखाई देती हैं। वह पढ लिखकर इतनी उँची चोटी पर गयी हैं फिर भी वह स्वतंत्र नहीं हैं। इस कहानी में लेखन ने आज की नारी की सामाजिक स्थिति और मानसिकता को बडी गहराई से चित्रित किया हैं।

शालिग्राम :- कहानी में लेखन ने बताया हैं कि, नारी का स्थान समाज में अनन्य साधारण हैं। सृष्टि के संचालन के लिए प्रकृति ने नारी और पुरूष की उत्पत्ति की। समाज को विकासमान रखने में पुरूष से अधिक नारी का भाग होता हैं। नारी पुरूष के जीवन को माँ, बहन, पत्नी, कन्या के रूप में परिपूर्ण बनाती हैं। मिसेज शर्मा के माध्यम से लेखक ने नारी की दयालुता पर प्रकाश डाला हैं। "सोचता हुँ इतना प्यार करती हैं मिसेस शर्मा - मुझसे और रीमा से। आदित्य से भी करती है, शर्मिला से भी, कितना विशाल हृदय हैं उनका-देव-हृदय-सा। पर शालिग्राम चलकर किसी के घर तो नहीं आता न। वह तो अपने स्थान पर ही प्रतिष्ठित रहता हैं"[१०] कहानी में नारी की महानता पर प्रकाश डाला हैं।

मालिना :-यह एक प्रेम कहानी हैं। वर्तमान काल में नारी शिक्षा का प्रचार होने के कारण आज नारी भी पुरूष के कन्धे-से-कन्धा लगाकर काम करती हैं। कहानी की नायिका मालिनी एक टायपिस्ट हैं। उसी ऑफिस में कहानी नायक सेक्शन ऑफिसर हैं। मालिनी बहुत बोल्ड हैं, पर वह नायक से बहुत शर्माती हैं। उसके हर निमंत्रण को ठुकराती हैं। असल में वह उसे चाहती हैं, इसलिए जब वह उसे अपनी शादी का कार्ड देता हैं तो वह उस पर गुस्सा उतारती हैं। वह कहती हैं - "हाँ - हाँ ठीक कह रही हूँ, इतने दिनों में मैने जो प्यार तुम्हारे लिए पाला हैं, मैंने जो सपने देखे हैं, उनका क्या होगा?"[११] लेखक ने यहाँ नारी समस्या को उभारा हैं। जो सदियों से पुरूष को अपना देवता मानती आयी हैं, उसके लिए अपना सर्वस्य खो चुकी हैं। बेखबर पुरूष को इसकी खबर तक नहीं।

भूखे बच्चे-सूखी डाली:- इसमें लेखक ने परिस्थिति की विडंबना को चित्रित किया हैं। इस कहानी की नायिका का नाम श्यामली हैं।

श्यामली की माँ हमेशा बीमार रहती हैं। घर का बोझ श्यामली ही संभालती हैं। उसका बडा भाई अन्ना की शादी होती हैं तो उसमें परिवत्रन होता हैं। वह धिरे-धिरे श्यामली को भूलता हैं। श्यामली अपने भाई बहनों के लिए सब कुछ त्यागती हैं। स्वयं अविवाहीत रहती हैं। उसे पता हैं कि, अन्ना की तरह विवाह होने के बाद ए भी बदल जायेंगे। श्यामली का जीवन सुखी डाली की तरह बनने जा रहा हैं। भास्कर और अन्ना में जब झगडा होता हैं तो छोटे तीनों बच्चें भूखे थे। दूसरें दिन श्यामली उनके लिए दोशे बनाती हैं बच्चे बडे प्रसन्न होकर खाते हैं। लेखक ने यह स्पष्ट किया हैं कि, नारी का अकेला जीवन कितना नीरस हो सकता हैं। जैसा कि, बियाबान, धूप में चिलचिलाती मरूभुमि, जहाँ कही भी हरीतिमा नहीं।

पछतावा :-कहानी में नारी के विडंबनाओं को चित्रित किया हैं। विवाह के पूर्व वह मनचाहा बर्ताव करती हैं। लेकिन विवाह के पश्चात, उसे अपने पति और उसके घरवालों ने बताये हुए रास्ते पर चलना पडता हैं। उसे अपने इच्छा आकांक्षाओं को मरोडना पडता हैं। नारी पूर्णतः परावलंबी बनती हैं। अपने पति की डाँट भी उसे सूननी पडती हैं। "पुरूष "कठोरता" ही "कठोरता" था, नारी "कोमलता" ही "कोमलता" ।"[१२]

पिल्लू :- कहानी में बताया गया है कि, आज - कल नारी पढ-लिखकर कितनी ही उँचा स्थान क्यों न प्राप्त करे उसे उपेक्षा भाव से ही देखा जाता हैं। कहानी की नायिका अनीता एक लेखिका बनना चाहती हैं, वह सर्वगुण सम्पन्न हैं। उसकी एक कहानी दैनिक "विश्वमित्र" में छप जाती हैं। वह बहुत प्रसन्न हैं। अपने पति को यह खुशखबर सुनाती हैं। तो उस पर कोई असर नहीं होता वह उन्हें सिर्फ भोग्यवस्तु के रूप में पाना चाहता हैं। नायिका कहती हैं - "मुझे छुओं मत।" में बहुत बडी कहानी लेखिका हूँ। सम्मान से बात करों।" इस बात पर पति कहता है-"जो कुछ भी हो, मेरी तो पत्नी ही हो न।"[१३] लेखक ने इस कहानी के माध्यम से अबला नारी के रूप पर प्रकाश डाला हैं। उसके समस्याओं को चित्रित किया। नारी चाहे कितनी भी पढी-लिखी क्यों न हो? यह स्वतंत्र नहीं हो सकती। पुरूष उस पर अत्याचार करता ही आ रहा हैं। वह सब कुछ चुप-चाप सहही हैं।

दुसरी आया :- कहानी की नायिका सुधा किसी स्कूल में नौकरी करती हैं। उसका पति भी नौकरी करता हैं। उनके बेबी को संभालने के लिए एक आया हो घर लाते हैं। आया अच्छी तरह उसकी देखभाल करती हैं। मगर सुधा को उसपर विश्वास नहीं हैं। वह आया को नौकरी से निकाल देती हैं। घर का सारा काम और बेबी की देखभाल भी सुधा को ही करना पडती हैं। फिर भी बेबी का मन सुधा के पास नहीं लगता वह उनके हाथों द्वारा दिया गया कोई भी अन्न नहीं खाता, इतना ही नहीं तो सुधा माता होकर भी अपनी रोती हुयी बेबी को चूप नही कर सकती। सुधीर उसकी देखभाल करता हैं। सुधा ने आया को तो निकाला पर सुधीर को क्या कहती जैसे - "पर सुधीर..? सुधीर से पीछा छुडाया जा सकता हैं क्या?"[१४] लेखक ने इस कहानी में स्पष्ट किया हैं कि कामकाजी महिला आज के भारतीय परिवेश में अपनी आर्थिक स्वतंत्रता को एक विशिष्टता के रूप में ले रही हैं, सहजता के रूप में नहीं। ऐसी स्थिति में स्त्री पुरूष सम्बन्धों में टकराव अवश्यम्भावी हैं। विवाह अपने आप में जीवन की एक बहुत बडी घयना हो सकता हैं, किन्तु सन्तान का जन्म तथा उसका पालन-पोषन-भावना, व्यवहार तथं परिस्थितियों इत्यादी के धरातल पर कहीं अधिक सघन अनुभव हैं, जो जीवन - क्रम को आपादमस्तक होता हैं।

नींद आने तक :- इस कहानी की नायिका शीला किसी दफ्तर में नौकरी करती हैं। वह एक बार बस के कंडक्टर और ड्रायव्हर की शिकार बनती हैं। ये उसपर रेप करते हैं। फिर भी उसका पति पूर्णतः दोषी शीला को ही समझता हैं। वह उसे कहता हैं, "क्या तुम्हारा मर जाना अधिक श्रेयस्कर नहीं था? तुम मुझे किस मुँह से बताने आयी हो कि तुम्हे दो पुरूषों ने.... यदि तुम पहले न मरीं, तो बाद में मर जाना चाहिए था।"[१५] अपने देश में आज भी नारी पर अन्याय होता हैं। इसका जिम्मेदार पूर्णतः पुरूष हैं, फिर भी वह नारी को ही दोष देता हैं। वह नारी को ही कलंकित समझता हैं। शीला पर अन्याय हुआ हैं फिर भी वह एक आदर्श भारतीय नाही हैं। उसमें प्रेरणा हैं। वह ही अंत में समझौता कर लेती हैं और कहती हैं - "कल हमारे बच्चें होंगे। उन्हें जब पता चलेगा कि उनकी माँ कं साथ क्या हुआ, तो क्या वे लोग आत्महत्याएँ नहीं करेंगे। हे भगवान। मेरे कारण मेरे पति और मेरे बच्चे....।"[१६] लेखक ने इस कहानी में नारी की दयनीय स्थित को उभारा हैं। नरेन्द्र कोहली एक सशक्त लेखक हैं और उन्होंने मानव जीवन में सम्बन्धित समस्याओं को समग्र रूप में उठाकर उनके यथार्थ चित्रण का प्रयत्न किया है। अधिकतर उन्होंने नारी समस्या और पति-पत्नी सम्बन्ध समस्या को कहानियों में स्थान दिया हैं।

संदर्भ ग्रंथ

१. सं.डॉ. इन्द्रनाथ मदान-परिशोध-२३, पृ. ७३. २. भगवान श्री राजनीश-शिक्षा में क्रांति, पृ. १२६ ३. मध्यकालीन भारत - बारगळ ढवळे, पृ. ९८ ४. राजेंद्र प्रसाद गुप्त - स्वा. विवेकानंद व्यक्ति और विचार, पृ. १७८-१७९ ५. डॉ. प्रमिला कपूर - कामकाजी भारतीय नारी, पृ. १०४ ६. जैन महेंद्रकुमार - हिन्दी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण - प्राक्कथन से, पृ. ११ ७. आत्मकथ्य - कुछ नरेन्द्र कोहली के विषय में - पृ. ५ ८. उपाध्याय नर्मदा प्रसाद - व्यक्तित्व एवं कृतित्व : नरेन्द्र कोहली, पृ. १८ ९. कोहली नरेन्द्र - समग्र कहानियाँ भाग -१, पृ. ३३६ १०.कोहली नरेन्द्र - समग्र कहानियाँ भाग-२, पृ. १६८ ११. कोहली नरेंद्र - समग्र कहानियाँ भाग - १, पृ. ११८ १२. कोहली नरेंद्र - समग्र कहानियाँ भाग -१, पृ. १६८ १३. कोहली नरेंद्र - समग्र कहानियाँ भाग -१, पृ. १८० १४. कोहली नरेंद्र-समग्र कहानियाँ भाग-१, पृ. २९५ १५. कोहली नरेन्द्र-समग्र कहानियाँ भाग-२, पृ. ०२ १६. कोहली नरेन्द्र - समग्र कहानियाँ भाग-२, पृ. ०२